भारत जल्द ऐसी लू का सामना करेगा, जो इन्सान की बर्दाश्त की सीमा के बाहर होगी

विश्व बैंक की रिपोर्ट में दी चेतावनी

भारत में पिछले कुछ दशकों में हजारों लोगों की मौत के लिए जिम्मेदार लू का प्रकोप चिंताजनक गति से बढ़ रहा है और वह (भारत) जल्द ऐसी भीषण गर्म हवाओं का सामना करने वाला दुनिया का पहला देश होगा जो इंसान की बर्दाश्त की सीमा से बाहर होगी । एक नयी रिपोर्ट में यह चेतावनी दी गई है।

विश्व बैंक की 'भारत में शीतलन क्षेत्र में जलवायु निवेश के अवसर शीर्षक वाली रिपोर्ट में कहा गया है कि देश अपेक्षाकृत ज्यादा गर्मी का सामना कर रहा है, जो जल्द शुरू हो जाती हैं और कहीं ज्यादा समय तक टिकती है।

रिपोर्ट में कहा गया है, ''अप्रैल 2022 में भारत समय से पहले लू की चपेट में आ गया था, जिससे आम जनजीवन ठहर-सा गया था और राजधानी नयी दिल्ली में तो तापमान 46 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया था।

मार्च का महीना तापमान में अप्रत्याशित वृद्धि का गवाह बना था और यह इतिहास का सबसे गर्म मार्च महीना बनकर उभरा था।'' यह रिपोर्ट तिरूवनंतपुरम में केरल सरकार के साथ साझेदारी में विश्व बैंक द्वारा आयोजित दो दिवसीय 'भारत जलवायु एवं विकास साझेदारों' की बैठक में जारी की जाएगी। रिपोर्ट में आशंका जताई गई है कि भारत में जल्द लू की तीव्रता उस सीमा को पार कर जाएगी, जो इनसान के बर्दाश्त करने के योग्य है। इसमें कहा गया है, ''अगस्त 2021 में जलवायु परिवर्तन पर अंतर-सरकारी पैनल (आईपीसीसी) की छठी आकलन रिपोर्ट में चेतवानी दी गई थी कि भारतीय उपमहाद्वीप में आने वाले दशक में भीषण लू चलने के अधिक मामले सामने आाएंगे।''

रिपोर्ट के मुताबिक, ''जी20 क्लाइमेट रिस्क एटलस ने भी 2021 में आगाह किया था कि यदि कार्बन उत्सर्जन का स्तर अधिक बना रहता है तो पूरे भारत में 2036 से 2065 के बीच लू 25 गुना अधिक समय तक चलने की आशंकाा है। यह आंकलन आईपीसीसी के सबसे खराब उत्सर्जन परिदृश्य के मद्देनजर किया गयाा था। ''

जैव विविधता पर ऐतिहासिक समझौता

- 2030 तक जैव विविधता के लिए 200 अरब डॉलर जुटाने का बनाया लक्ष्य
- विकासशील देशों को मिलेगी मदद

कनाडा के मॉन्ट्रियल में जैव विविधता पर संयुक्त राष्ट्र के शिखर सम्मेलन में सोमवार को वार्ताकार एक ऐतिहासिक समझौते पर पहुंचे, जो दुनिया में भूमि व जल के सरंक्षण और विकासशील देशों को जैव विविधता का बचाने के लिए धन मुहैया कराने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। संयुक्त राष्ट्र जैव विविधता सम्मेलन (सीओपी15) के समापन से एक दिन पहले यह समझौता हुआ है। सीओपी 15 की अध्यक्षता कर रहे चीन ने इससे पहले एक मसौदा जारी किया था, जिसमें 2030 तक जैव विविधता के लिए महत्वपूर्ण माने जाने वाली 30 प्रतिशत भूमि व जल के संरक्षण का आहवान किया गया है। वर्तमान मे 17 प्रतिशत भूमि व 10 प्रतिशत समुद्री क्षेत्रों का संरक्षण किया गया है। यह लुप्तप्राय प्रजातियों के संरक्षण, जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने और प्रदूषण को कम करने के प्रयासों को फिर से बढ़ाने का भी आहवान करता है। प्रकृति के संरक्षण संबंधी अभियान समूह के निदेशक ब्रायन ओ डॉनेल ने कहा, विश्व स्तर पर कभी भी संरक्षण के लिए इतना बड़ा लक्ष्य नहीं रखा गया।' उन्होनें कहा, यह हमें जैव विविधता को नष्ट होने से बचाने का एक अवसर प्रदान करता है, अब हम उस स्तर पर पहुंच गए हैं जिसके बारे में वैज्ञानिकों का मानना है कि उससे जैव विविधता में एक उल्लेखनीय अंतर आ सकता है।'

विकास माडल

इस देश का विकास अमेरिका या चीन की तर्ज पर नहीं हो सकता बल्कि इसका विकास भारतीय दर्शन और इसकी संस्कृति तथा सकल संसार के बारे में इसके सुस्थापित विचारों और 'देशज' परिस्थितियों के अनुरूप ही किया जा सकता है। ग्रामों के विकास को ही भारत के सर्वांगीण विकास का फार्मूला मानते थे। उनका विकास मन्त्र पाश्चात्य विकास सिद्धांत से पूरी तरह भिन्न था और वह मानते थे कि गांवो के आत्मनिर्भर होने से भारत में आत्मनिर्भरता आयेगी। इसका मतलब यह कदापि नहीं था कि गांव व ग्रामीण जगत आधुनिक विकास प्रणाली से विमुख रहेगा बल्कि यह था कि औद्योगीकरण का पहिया गांवों से शहरों की तरफ घमेगा तभी देश का समुचित और सम्यक विकास संभव होगा तथा गरीबी का प्रचार-प्रसार रूकेगा।

वर्तमान समय में चीन या अमेरिका का अन्धानुकरण करके हम उस रास्ते पर जा सकते हैं जिसमें विकास और विनाश साथ-साथ चलते हैं। इसके साथ ही कोइ भी राष्ट्र ऊंची-ऊंची अट्टालिकाएं बनाने या बड़े-बड़े कल कारखाने बनाने मात्र से ही विकसित कहलाता है। लोगों का विकास स्थानीय परिस्थितियों व संस्कृति को अक्षुण रखते हुए इस प्रकार होना चाहिए कि व्यक्ति की निजी पहचान व उसका गौरव और आत्म सम्मान इस प्रकार संरक्षित रहे कि उसके आर्थिक विकास की छाया में पूरा समाज आनन्दित हो। केवल भौतिक विकास के लिए प्रकृति का अंधाधुंध दोहन समाज में ऐसी विकृतियों को जन्म देने में सक्षम होता है कि प्राकृतिक विपदाओं में घिर कर विकास असन्तुलित हो जाता है और आर्थिक गैर बराबरी के और गहरी होने की संभावनाएं जड़ पकड़ लेती है।

प्रकृति पृथ्वी पर रहने वाले हर व्यक्ति की आवश्यकताओं की पूर्ति तो कर सकती है मगर उसके लालच को पूरा करना उसके वश में नहीं होता। यदि हम इतिहास पर नजर डालें तो लार्ड क्लाइव द्वारा 1756 में बंगाल के युवा नवाब सिरोजुद्दौला को छल-बल से हरा कर पूरी बंगाल की रियासत को हड़पने के समय विश्व कारोबार में भारत का हिस्सा लगभग 24 प्रतिशत से ऊपर था मगर 1947 में यह घट कर एक प्रतिशत से भी कम रह गया। इसका मूल कारण यह था कि 1756 तक भारत एक विकसित राष्ट्र था और अपनी आय स्त्रोतों के बूते पर ही यह स्थानीय परिस्थितियों व संस्कृति के अनुसार तरक्की कर रहा था। अग्रेंजो ने पूरे दो सौ साल तक इसके इन्हीं स्त्रोतों का दोहन करके इसे वैश्विक आधुनिकीकरण की तकनीक से बाहर कर दिया वरना इससे पहले तक भारत विश्व के विकास में अपनी ही टैक्नोलोजी व ज्ञान के बूते पर सहभागिता कर रहा था और अपनी प्राकृतिक सम्पदा की रक्षा भी कर रहा था।

प्रकृति को पूजने वाले देश में यदि प्रकृति का विनाश करके विकास खोजा जाता है तो वह भारतीय मानवता के सिद्धान्तों के विरूद होगा। जबकि चीन व अमेरिका जैसे देशों में प्रकृति को बेजान मानते हुए उसकी कीमत पर किये गये विकास को उपलब्धि मान लिया गया है। चीन में तो विकास का पैमाना अमेरिका से भी और ज्यादा विद्रूप है क्योकि इस देश की 'कम्युनिस्ट पूंजीवादी' सरकार ने मुनष्य को ही 'मशीन' में तब्दील कर डाला है जिसकी वजह से मनुष्य की संवेदनाएं भी मशीनी हो गई हैं। भारतीय संस्कृति में भौतिक सुख का अर्थ यह कदापि नहीं बताया गया कि व्यक्ति पूर्णतः स्वार्थी होकर समाज, संस्कृति और दैवीय उपकारों की उपेक्षा करने लगे बल्कि यहां 'दरिद्र नारायण' की सेवा को ईश्वर भक्ति का साधन माना गया। जब हम प्रकृति के संरक्षण की बात करते है तो इसमें सम्पत्ति के समुचित बंटवारे का भाव भी समाहित रहता है क्योकि भारत में प्राकृतिक सम्पदा पर आश्रित रहने वाला पूरा समाज अपने आर्थिक विकास के लिए इसी पर निर्भर रहता है। बड़े कल कारखाने निश्चित रूप से विकास की आवश्यक शर्त होते है और भौतिक सुख-सुविधा प्राप्त करने का अधिकार भी बदलते समय के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति का होता है परन्तु यह दूसरे व्यक्ति को उजाड कर पूरा नहीं किया जा सकता।

जो धर्म मनुष्य को सुविधा सम्पन्न और सुखासीन बनाता है मगर प्रकृति को नष्ट करता है, वह धर्म नहीं है। यहां धर्म का अर्थ मजहब नहीं बल्कि कर्त्तव्य या इंसानियत है। जबकि भारत की मान्यता 'उपभोग' संस्कृति में बसी हुई है। जबकि भारत की मान्यता 'उपयोग- की रही है। भारत में प्रत्येक रईस या सम्पन्न व्यक्ति को अपने उपभोग की अधिकतम सीमा तय करनी चाहिए और शेष सम्पत्ति को समाज के उत्थान मूलक कार्यो में लगाना चाहिए। वास्तव में यही गांधी का 'अहिंसक समाजवाद' था। इसकी जड़े 'धर्म खाते' से जुडी हुई थीं। भारत में प्रत्येक व्यापारी का एक धर्म खाता भी हुआ करता था। पहले समय में कुल लाभ की रूपये में इकन्नी अर्थात एक रूपये में से छह पैसे इसी खाते में जमा होते थे जो सामाजिक कल्याण के काम में लगते थे। बाद में इसक स्वरूप धार्मिक हो गया। मगर यह खाता समाज व प्रकृति के संरक्षण के लिए ही होता था। राजे-रजवाडों में संगीतकारों, साहित्यकारों व लोक कलाकारों का संरक्षण इसी रवायत के चलते विस्तारित हुआ। परन्तु वर्तमान समय में यदि हम निजी सुख और सुविधा के लिए स्थानीय समय में यदि हम निजी सुख और सुविधा के लिए स्थानीय परिस्थितियों और आर्थिक स्त्रातों की उपेक्षा करते है ताो सामाजिक असमानता को बढ़ाने में सहायक होते है। पूंजी की ताकत पर खरीदी गई सुविधा अन्त में पूंजी की ताकत पर ही स्थानान्तरित हो जाती हे और इस क्रम में समाज के 90 प्रतिशत लोगों की कोई भागीदारी नहीं होती। अतः हमारे लिए न अमेरिका और न चीन विकास के माडल हो सकते हैं। हम बागों को लगाने वाले और पशुओं को पूजने वाले लोग है।

भारत के सांस्कृति प्रसार का समय

दुनिया में अब आनेवाला वक्त भारत का हो सकता है। अखण्ड भारत संग्राम का विचार देश की समृद्ध सभ्यता की विरासत और सांस्कृतिक व बौद्धिक शक्ति (सॉफ्ट पावर) को निर्णायक रूप में बढ़ावा देने वाला है। इसकी शुरूआत भी हो गई है।

- महाभारत की गांधारी गंधार से थी, जिसे अब कंधार कहा जाता है।
- ईरान का नाम 'आइरयनेम वेजा यानी आयों की भूमि से लिया गया है।
- दुनिया का सबसे बड़ा विष्णु मंदिर अंकोरवाट कंबोडिया में बना हुआ है, भारत में नहीं।
- दो प्राचीन साम्राज्यों हित्ती और मितानी (आज के तुर्की व सीरिया के करीब) में 1380 ईसा पूर्व वैदिक देवता इ ं द्र ,
- वरूण और मित्र का आहान कर शांति संधि की थी।
- वरूण को यूनानियों के यूरेनस के रूप में अपनाया था।
- दो भारतीय भिक्षू, कश्यप मातंग और धर्मरक्षा सबसे पहले बौद्ध ग्रंथ को चीन में लेकर गए जबकि बोधिधर्म ने मार्शल
- आर्ट को शाओलन (चीन) तक पहुंचा दिया।
- इंडोनेशिया के 20000 रूपिया के नोट पर गणेशजी प्रमुखता से अंकित रहे है।
- थाईलैंड में चक्री वंश के राजा आज भी राजा राम की उपाधि धारण करते हैं और उनका शाही चिहन गरूड है।
- मलयेशिया में हिकायत सेरी राम (रामायण का मलय रूपांतर) आज भी छाया पुतलियों के साथ प्रदर्शित होती है।

इस बात के सबूत बहुतायत में है कि प्राचीन भारत की बौद्धिक और सांस्कृतिक ताकत बहुत महत्वपूर्ण थी। क्या आज उस दिशा में काम करना गलत है? वास्तव से क्या उस प्रभाव के दायरे में महा अखंड भारत नहीं आएगा? लेकिन भारत आज जब दुनिया की पांचवी सबसे बडी अर्थव्यवस्था है तो क्या भारत अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी बौद्धिक और सांस्कृतिक ताकत का जवन नहीं बढ़ा सकता। इसके लिए एक मजबूत और सुगठित कोशिश की जरूरत होगी। दक्षिण कोरिया के साथ भारत की तुलना करे तो ब्रैड कोरिया को बढ़ावा देने के लिए के पॉप, पैरासाइड और स्क्विड गेम का इस्तेमाल हो रहा है। इसकी तुलना यूके से करे जो ब्रिटिश काउंसिल, बीबीसी वन्डै सर्विस, राजशाही और इंग्लिश यूनिवर्सिटी एजुकेशन के जरिए अपनी संस्कृति का प्रचार-प्रसार करता है। ऐसे में भारत अपना प्रभाव क्षेत्र बढ़ाने के लिए क्या कर सकता है? असल में काफी कुछ कर सकता है।

अयंगर अवॉर्ड : प्रधानमंत्री मोदी की कोशिशों से संयुक्त राष्ट्र द्वारा अंतराष्ट्रीय योग दिवस को मान्यता दी गई, यह ब्रैड इंडिया बढ़ाने की दिशा में रखा गया कदम था। लेकिन हम इसे और आगे ले जा सकते है। बी.के. एस. अयंगर मशहूर योग गुरू थे। क्या ऐसा हो सकता है कि सरकार योग के ऑस्केर अवार्ड की तरह अयंगर अवॉर्ड बना दें। कैसा रहे कि अयंगर सर्टिफिकेशन कार्यक्रम को फंड दिया जाए, जिसे योग एक्सपर्ट प्रामाणिकता के बैज के रूप में दुनिया में दिखाएं?

बौद्ध टूरिजम : दुनिया में करीब 53.5 करोड बौद्ध आबादी है। इसमें से बहुत-से इस बात से अनजान है कि इस आस्था का अंकुर भारत में ही फूटा था। अधिकांश बौद्ध स्थल भारत या फिर नेपाल में है। इसमें बोधगया, राजगीर, नालंद, कुशीनगर, लुबिनी, श्रावस्ती और सारनाथ शामिल है। लेकिन एक नोडल एजेंसी की कमी है जो विरासत स्थलों का प्रबंधन संभाले और अंतरराष्ट्रीय कनेक्टिविटी को सुनिश्चित करे। मक्का में हज और प्रयाग का कुंभ – ये दो मिसाले है जो बताती है कि सांस्कृतिक प्रचार-प्रसार में धार्मिक टूरिजम की कितनी अहम भूमिका होती है।

फिल्मों का जादू : भार सालाना करीब 1600 फिल्में बनाता है। क्या उन्हे भारतीय प्रवासियों से पूरे पर्याप्त दर्शक मिलते है? हर भारत में फिल्मों के प्रमोशन पर भारी खर्च करते है और ऑस्कर में भारत की एंट्री पर लगातार बहस करते है, जबकि हम आराम से भारतीय फिल्मों को देश में कामयाबी पाने के बाद विदेश में मार्केटिंग के लिए बजटीय सहायता दे सकते है।

इलाज के तरीके : भारत में कई वैकल्पिक थेरपी है जैसे-आयुर्वेद, प्राणायाम, पंचकर्म, नेचरोपैथी आदि। हमारे यहाँ अथर्ववेद में अश्वगंधा, हल्दी से लेकर मुलेठी तक 579 चीजों से हर्बल इलाज की सूचीबद्ध विरासत भी है। स्ट्रेस मैनेजमेंट के लिए मेडिटेंशन का अभ्यास अब चलन में आ चुका है। सरकार पीपीपी के आधार पर वैधानिक इलाज की सुविधा के विश्वस्तरीय सेंटर विदेश में क्यों नहीं बना सकती?

संस्कृत : भारत ग्लोबल इनोवेशन इंडेक्स में 40 रैंक पर पहुंच गया है, इसके बावजूद हमें चिंता इस बात की होनी चाहिए कि संस्कृत जो हमारे प्राचीन ज्ञान की कुंजी है, उसे जल्द ही जर्मनी जैसे देशो द्वारा हथिया लिए जाएगा, जहां सस्कृत के लिए दसियों अध्ययन केन्द्र स्थापित है। यह वक्त ऐसा भारतीय केन्द्र विसर्सित करने का जो भारतीय ज्ञान और भारत की श्रेष्ठता को सरंक्षित कर सके।

चिकन टिक्का मसाला से परे : दुनिया हल्दी मसाला चाय, शुद्ध घी और शाकाहार (वींगन) के बेहद उत्साह से अपना रही है। हम घूमंतू इंडियन फूड फेस्टिवल क्यों नहीं मनाते, जो दुनियाभर के बेहतरीन भारतीय शेफ को देखरेख में हो और इसके जरिए भारतीय पकवानों को विभिन्न देशों में ले जाया जाए। इसमें होटल चेंस और एयरलाइंस भी साझेदार हो सकते है। जेआरडी टाटा की एयर इंडिया और बॉबी कूका के महाराजा ने ब्रैंड इंडिया को बौद्धिक और सास्कृतिक ताकत बनने की अवधारणा से पहले बखूबी संभाला है। इस बारे में सोचें कि सिंगापुर और दुबई एयरलाइंस ने कैसे अपनी राष्ट्रीय छवि के लिए बढ़िया तरीके से काम किया है।

हमारे पास जश्न मनाने और गर्व करने काो बहुत कुछ है पर हम सही दिशा में नहीं सोच नहीं पाते है। न्यू यार्क में साल 1969 में पंडित रविशंकर की परफामेंस ने ब्रैंड भारत के लिए जो काम किया, वह कोई प्रफेशनल एजेंसी भी नहीं कर सकती थी। क्या हम अपने 38 भारतीय सांस्कृतिक केंद्रों का कायाकल्प, रीब्रैडिंग और री-इंजीनियरिंग नहीं कर सकते ताकि अपनी ताकत दिखा सकें? इसके लिए गुणवत्ता और मात्रा दोनों में सुधार करना होगा। करीब 2300 साल पहले चाणक्य ने साम (विनय) को दाम (आर्थिक इनाम), भेद (फूट डालना) या दंड (सैन्य बल) से बेहतर बताया था। शायद यह कौटिल्य वाला नजरिया हो था जिसने भारत को 1000 ईसवीं तक दुनिया के सकल घरेलू उत्पाद के एक चौथाई हिस्से पर कब्जा करवा दिया था। क्या भारत सफलता के उस प्रदर्शन को अब दोहरा सकता है? इसका जवाब यकीनन 'हां' ही है।